Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

हरियाणवी साहित्य में पहेलियाँ

Sonam*

M.A. (Hindi) B.A, B.Ed., Village Rajpura Sahani, Tehsil, District Sirsa

सार – *'पहेली' शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रहेलिका' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है-विषम अवस्था या उलझन। पहेली को संस्कृत में 'ब्रह्मोदय', भोजपुरी में 'बुझौवल', राजस्थानी में 'फाली' या पारसी, मेवाती में 'बताणी बात' या 'फाली आडना' कहते हैं। "हरियाणवी में इसे 'फाली आडना' (फल बतलाना) अथवा गाहा खोलना, गाथा का रहस्य बतलाना कहते हैं। हरियाणा में प्रचलित सीठणे छन (जो ब्याह-शादी के अवसरों पर बोले जाते हैं) तथा साहित्य संसार में प्रचलित 'दृष्टिकूट' और 'मुकरिया' आदि पहेलिका-परिवार के ही अंग-उपांग हैं।"*1 *'सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता और लाक्षणिकता इसकी भाषायी विशेषताएँ हैं।*2

----------X----------

वैदिक काल से अब तक पहेलियों का प्रयोग होता आया है। इसकी परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। वैदिककाल में अश्वमेघ यज्ञ के अवसर पर, ये अनुष्ठान का एक आवश्यक अंग मानी जाती थीं। अश् व की बलि देने से पूर्व 'होता' और ब्राह्मण पहेलिका पूछा करते थे, जिसे 'ब्रह्मोदय' कहा जाता था। संस्कृत साहित्य में पहेलिका प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। विद्वानों ने पहेलिका को दो भागों में विभाजित किया है- (अ) अन्तर्लापिका (आ) बहिर्लापिका। कतिपय पहेलियाँ ऐसी हैं, जिनमें केवल प्रश्न किया गया है और उनका उत्तर बाहर से देना पड़ता है। यथा-

पंचभत्र्री न पांचाली द्विजिह्वा न च सर्पिणी।

कृष्णामुखी न मार्जारी, यो जानाति सरूपडितरू।।

अर्थात् पाँच पतियों के होते हुए भी वह पांचाली (द्रोपदी) नहीं, दो जिह्वा वाली होकर भी वह सर्पिणी नहीं तथा काली मुख वाली होकर भी मार्जारी (बिल्ली) नहीं है, जो इसे जाने वह पंडित है। फाली (उत्तर) - लेखनी या कलम।

बारहवीं-तेरहवीं शती के कवि अमीर खुसरो ने दूसरे प्रकार की अनेक पहेलियाँ बनाई हैं। यथा- 'बीसों सिर काट लिया, ना मारा, ना खून किया।'

फाली (उत्तर) - नाखून।

उनका एक दूसरा उदाहरण द्रष्टव्य है-

श्याम वर्ण और दाँत अनेक, लचकत जैसे नारी।

दोनों हाथ से खुसरो खींचै और कहे तू आरी।।

फाली (उत्तर) - आरी (लकड़ी चीरने का औजार)

अन्य उदाहरण भी द्रष्टव्य है-

एक थाल मोती का भरा, सबके सिर पर उलटा धरा।

मोती उसके एक न गिरे, चारों ओर वह थाली फिरे।।

फाली (उत्तर) - आकाश

वास्तव में, खुसरो की पहेलियाँ लोकोन्मुखी हैं। आचार्य शुक्ल ने लिखा है- "जिस ढंग के दोहे, तुकबंदियाँ और पहेलियाँ आदि कहने की उत्कंठा इन्हें भी हुई।"3

पहेलियाँ लोक साहित्य का प्रमुख अंग हैं। हरियाणा में ये पहेलियाँ ग्राम्य परिवेश में अधिक प्रचलित हैं। प्राचीनकाल में ग्राम-ग्राम में पहेलियों के विशेषज्ञ होते थे। नित नई पहेलियाँ जानने की उत्कंठा लोगों को बनी रहती थीं। प्राचीनकाल में गली-मोहल्ले की टोलियों के रूप में भी पहेली बूझने की प्रथा थी। वास्तव में, अवकाश के क्षणों में पहेलियाँ आबाल-वृद्ध, बनिता आदि सभी के लिए मनोरंजन का उत्कृष्ट साधन थीं। आज से 30-40 वर्ष पहले हरियाणा के गांवों में जामाता (जँवाई) की बुद्धि परीक्षा के लिए ससुराल में छन (छंद) पूछे जाते थे।

www.ignited.in

पहेलियों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन होता है। ये वक्ता के बुद्धि विलास तथा श्रोता की बुद्धि परीक्षा के साधन रूप में भी आती है। लोक साहित्य विशेषज्ञ पं. रामनरेश त्रिपाठी ने पहेलियों का 'बुद्धि पर शाण चढ़ाने का यंत्र' तथा 'स्मरण शक्ति और वस्तु ज्ञान बढ़ाने की कलें' कहा है। आचार्य भोजराज ने पहेलिकाओं के उपयोग पर टिप्पणी देते हुए कहा है-'क्रीड़ा गोष्ठी विनोदेषु तज्ज्ञैराकीर्ण मंत्रणे। पर व्यामोहने चापि सोपयोगारू पहेलिका।' अर्थात् खेल, गोष्ठी तथा विनोद काल में पहेलिका जानने वाले पारस्परिक विचार विनिमय अथवा परामर्श एवं श्रोतावृंद को व्यामोहित करने के लिए अथवा आश्चर्य-चकित करने के लिए इनका उपयोग करते हैं।4 उन्होंने पहेलिका के छः भेदों की ओर संकेत किया है- अंतः प्रश्न, बहिरू प्रश्न, बहिरन्तः प्रश्न, जाति प्रश्न, पृष्ठ प्रश्न, उत्तर प्रश्न। डॉ. सत्येन्द्र ने पहेलियों को सात भागों में विभाजित किया है-1. खेती सम्बन्धी, 2. भोजन सम्बन्धी, 3. घरेलू वस्तु सम्बन्धी, 4. प्राणी सम्बन्धी, 5. प्रकृति सम्बन्धी, 6. अंग-प्रत्यंग सम्बन्धी, 7. अन्य।5 डॉ. शंकरलाल यादव ने एक और भेद की ओर संकेत किया है। वह है 'पौराणिक कथा सम्बन्धी।'6 यथा-

आप कँवारा बाप कँवारा और कँवारी महतारी।

पुत्र पिता नै गोद खिला, रहया देखो न वेदाचारी।।

उक्त पहेली में मकरध्वज और हनुमान की पौराणिक गाथा कही गई है। श्लेष का अनूठा प्रयोग हरियाणा की एक ग्रामीण पहेली में देखने को मिलता है-

दिल्ली बोई बेल, मंगर पै नाल गये।

हथनापुर फूले फूल, पटालै पान गये।।

उक्त पहेली में एक बेल का वर्णन है जो दिल्ली में बोई गई है, जिसके नाल (तने) आदि मुंगेर तक गये हैं। हस्तिनापुर में उस पर फूल लगे हैं और पटियाला तक पत्ते गये हैं। उक्त अलौकिक बेल का वर्णन श्रोता को आश्चर्यचकित कर देता है। उक्त पहेली का फल है- 'ग्रामों में स्त्रियों द्वारा धारण की जाने वाली 'आँगी' है। यहाँ दिल्ली (दिल, वक्षस्थल) मंगर (पीठ) हथनापुर (हाथ, भुजमूल), पटालै (पटियाला, पेट) श्लिष्ट शब्द हैं। आँगी (क्चशस्रद्बष्द्ग) वक्ष से चलती है और कमर तक उसकी तणियाँ बंध जाती हैं जो बेल के तने के समान होती है। भुजमूल पर फूला हुआ भाग हस्तिनापुर के फूल और पेट पर पटियाला पर पान के सदृश खुला कपड़ा रहता है।

हरियाणा की एक विशेष पहेली द्रष्टव्य है-

दो भाई एक से, काम करें कट्ठा।

एक रहा हांडा फेरी में, एक रहा बेट्ठा।।

यहाँ एक भाई काम करते हुए बैठा रहता है और दूसरा घूमता रहता है। इस पहेली का फल (उत्तर) है-चाकी।

हरियाणा में निम्नलिखित पहेली बहुत प्रसिद्ध है-

काक्काजी हमने कुक्कू देख्या, कहो भतीजा कैठे देख्या।

बिना चोंच के चुगते देख्या, बिना परों के उड़ता देख्या।

यहाँ कुक्कू एक लोकमेधा प्रसूत काल्पनिक शब्द है जिसमें 'शब्द ध्वनि' विशेष अर्थ की प्रतिपादिका है। इसका अर्थ है- किसान के कूएं पर का 'चाक'।

रूपक शैली के द्वारा भी जीवन की सटीक व्याख्या निम्नांकित पहेली में की गई है-

कच्चे फल सुहावने, गद्दर हुए मिठान।

वे फल कौन से, जो पक्के हो परवान।

उक्त पहेली में कच्चे, गद्दर और पके फलों के रूपक से शैषव, यौवन और वार्द्धक्य का यथार्थ चित्रण किया गया है। जीवन में बाल्यावस्था सुहावनी, युवावस्था आनन्ददायक और वृद्धावस्था कड़वी होती है।

हरियाणवी में कृषि सम्बन्धी पहेलियाँ भी मिलती हैं। यथा-

हरी थी मन भरी थी, नौ लाख मोती जड़ी थी।

राजा जी के महल में, दुसाला ओढ्या खड़ी थी।।

उक्त पहेली में 'मकई' की कूकड़ी का मुँहबोला वर्णन किया गया है। जब मैं हरी थी बड़ी मनोहर थी। नौ लाख मोती (असंख्य मोती) अर्थात् पीले-पीले दाने मेरे शरीर में जड़े हुए थे और किसान के महल (खेत) में दुशाला (भुट्टे के पत्ते) ओढ़े खड़ी थी।

कृषि संबंधी एक अन्य पहेली द्रष्टव्य है-

छोटा-सा सिपाही, वाके पेट में बिवाई।

फाली (उत्तर)- गेहूं।

खान-पान सम्बन्धी पहेलियाँ भी हरियाणवी में मिलती हैं-

www.ignited.in

गोल गोल चैंतरा, पोरी पोरी रस।

पता तो बता नहीं, रुपये दे दस।।

फाली (उत्तर)-जलेबी

'पतंग' का वर्णन भी हरियाणे की एक पहेली में हुआ है-

एक कहानी मैं सुनाऊँ, सुन लो मेरे पूत।

बिना परों के उड़ गई, बाँध गले में सूत।।

'साईकिल' का वर्णन भी एक पहेली में हुआ है। यथा-

घोड़ा है पर घास नहीं खाता।

खड़ा करें तो डिग-डिग जाता।।

लुहार की भट्टी में लोहे की काली कुस को पड़ते और तपकर लाल होते हुए देखकर निम्नलिखित पहेली बनाई गई है-

काला बाठ्या, लाल काठ्या।

शिक्षा सम्बन्धी पहेली भी लोक साहित्य में मिलती हैं। यथा-

धोली धरती, काला बीज।

बोअण आला गावै गीत।।

यहाँ धोली धरती (कागज), काला बीज (अक्षर) बोअण आला (लिखने वाला) का वर्णन हुआ है।

शरीर सम्बन्धी एक पहेली द्रष्टव्य है -

गरमी में वो पैदा होवै, धूप पड़े लहरावै।

हे सजनी वो इतना कोमल, हवा लगै कुम्हलावै।।

फाली (उत्तर)-पसीना

हरियाणवी में जीव सम्बन्धी पहेलियाँ भी मिलती हैं। यथा-

एक जानवर ऐसा जिसकी दुम पर पैसा।

फाली (उत्तर)-मोर

हरियाणवी में प्रकृति सम्बन्धी पहेलियाँ भी मिलती हैं। यथा-

चार खूँट चैबारे, जिसमें खेले दो बणजारे।

फाली (उत्तर)-चाँद-सूरज

दैनिक व्यवहार की वस्तुएँ भी पहेलियों का विषय हैं। यथा-

सोने की-सी चोंच निकाले, दम दम पानी पीता है।

फाली (उत्तर)-दीया (दीपक)

प्रकृति सम्बन्धी एक अन्य पहेली द्रष्टव्य है-

तारा रोया रात कू, आँसू गिरा जमीन।

रातूँ झेला दूब ने, किरण ले गई छीन।।

फाली (उत्तर)-ओस कण

कृषि सम्बन्धी एक अन्य पहेली द्रष्टव्य है-

हरियल खेती ज्ञाभण गाय, जब जाणूँ जब मुँह में आय।

फाली (उत्तर)-फसल

दैनिक व्यवहार सम्बन्धी एक अन्य पहेली द्रष्टव्य है-

एक नार अजब हुड़दंगी, आधी टाँग राखे नंगी।

जो करे धोबन को काम, है वही या नारी को नाम।।

फाली (उत्तर)-धोती

हुक्का सम्बन्धी एक पहेली द्रष्टव्य है-

बड़ रे बड़ तेरी पाणी में जड़।

टुगली में आग लगी, लोगन की लर।।

एक अन्य पहेली द्रष्टव्य है-

एक बलेडो, सहस घर, न्यारा न्यारा द्वार।

याको अर्थ लगा जा, पाणी जब भर लइयो नार।।

फाली (उत्तर)-मधुमक्खी का छत्ता।

वस्तुतः पहेलियों का हरियाणवी लोक साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। पहेलियाँ ज्ञान रस से भरी कटोरियाँ हैं, जिनका रस पीकर पाठक व श्रोता मदमस्त हो जाते हैं। हरियाणवी पहेलियों की भाषा-शैली ग्रामीण परिवेश से सम्पृक्त हैं। हरियाणवी

www.ignited.in

पहेलियाँ ठेठ हरियाणवी शब्दों, दिलचस्प शैली और ग्रामीण जीवन से ओतप्रोत हैं।

संदर्भ

1. रघुबीर सिंह मथानाध्डॉ. बाबूराम, हरियाणवी साहित्य का इतिहास, पृ. 93
2. लालचंद गुप्त 'मंगल', हरियाणा का लोक साहित्य, पृ. 78
3. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 61
4. विश्वनाथ, साहित्य दर्पण, दशम परिच्छेद, पृ. 499 पर पादटिप्पणी
5. शंकरलाल यादव, हरियाना प्रदेश का लोक साहित्य, पृ. 437
6. वही, पृ. 437

Corresponding Author

Sonam*

M.A. (Hindi) B.A, B.Ed., Village Rajpura Sahani, Tehsil, District Sirsa

www.ignited.in